ISSN : 2583-2948

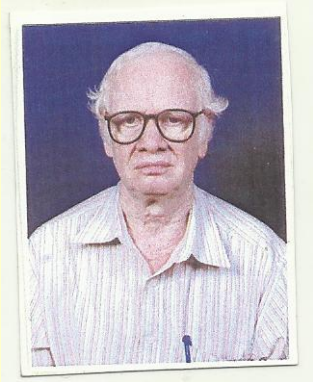

डॉ एस कृष्ण बाबु
- अध्यक्ष, वाजा ए पी एवं
हिन्दी साहित्य भारती, आन्ध्र प्रदेश इकाई
मोबाइल नं.8885990444

व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा में तेलुगु भाषा की स्थिति और संभावनाएँ

व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा आधुनिक युग की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण आवश्यकता है| व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए इसे वर्ष 2005 में ही राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना में सम्मिलित किया गया है। परन्तु वैश्वीकरण एवं अन्तर्जालीकरण के वर्तमान युग के शैक्षिक जगत में इसे इतना महत्व नहीं दिया जा रहा है| वास्तव में इस शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा भी कहा जाता है जो छात्रों को जीविकोपार्जन करने योग्य बनाए। शिक्षा के क्षेत्र में व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा को जोड़ने का प्रथम प्रयास वर्ष 1964 में कोठारी आयोग ने किया। इस आयोग ने सरकार को माध्यमिक शिक्षा के व्यावसायीकरण का सुझाव भी दिया। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार ने, विशेष रूप से आन्ध्र सरकार ने इस सुझाव पर इतना ध्यान नहीं दिया| अत: इस दिशा में तेलुगु भाषा का अधिक विकास नहीं हो पाया|

व्यावसायिक शिक्षा क्या है? व्यवसायीकरण के उद्देश्य और विशेषता एवं शिक्षा में इसकी आवश्यकता के संबंध में थोडी-सी जानकारी प्राप्त करना उपयुक्त होगा| उसके अनन्तर यह देखने का प्रयास करेंगे कि तेलुगु भाषा के माध्यम से यह शिक्षा कैसे दी जा सकती है और कहाँ तक दी जा रही है| सामान्यतः शिक्षा को व्यवसाय के साथ जोड़ना ही व्यवसायिक शिक्षा कहलाती है| परन्तु वास्तव में इसका अर्थ इससे अधिक व्यापक है। व्यावसायिक शिक्षा छात्रों को व्यवसाय चुनने एवं व्यवसाय से संबंधित योग्यता प्राप्त कराने का अवसर प्रदान करती है।

व्यावसायिक शिक्षा क्या है? भारत में छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने के लिए एक परिषद के निर्माण की बात कही गयी जो व्यावसायिक शिक्षा के क्रियान्वयन एवं नीति निर्माण की योजना बनाएं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार द्वारा संयुक्त व्यावसायिक शिक्षा परिषद की स्थापना की गयी। यह परिषद व्यावसायिक पाठ्यक्रम के निर्माण हेतु नीति बनाती है और उसके कार्यान्वयन हेतु विद्यालयों को मंजूरी प्रदान करती है।

व्यावसायिक शिक्षा की विशेषताएं

1. यह छात्रों को समाज से जुड़ने और समाज सेवा करने हेतु प्रेरित करती है।
2. जीविकोपार्जन हेतु यह छात्रों में व्यावसायिक कौशल की प्रवृत्ति का विकास करती है।

3. इससे छात्रगण विद्यालयों में क्रियाशील रहते हैं| फलत: उनका शारीरिक विकास भी होता है।

4. इससे वे अपने सामाजिक एवं पारिवारिक दायित्वों से भी परिचित हो जाते हैं।

5. व्यावसायिक शिक्षा द्वारा शिक्षा के वास्तविक आशयों को मूर्त रूप प्राप्त होता है|

व्यावसायिक शिक्षा के उद्देश्य और लक्ष्य

- छात्रों को व्यवसायपरक बनाना जिससे वे समाज में सम्मानपूर्वक रह सकें।
- छात्रों में जीविकोपार्जन की दक्षता बढ़ाना ताकि वे अपने पारिवारिक दायित्व निभा सके|
- राष्ट्र का विकास करना और समाज को सही दिशा प्रदान करना
- राष्ट्रीय आर्थिक संरचना को दृढ बनाना और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करना
- शिक्षा के विस्तार को बढ़ावा देना।

शिक्षा के क्षेत्र में व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा का महत्व

किसी देश के विकास में उस देश की शैक्षिक व्यवस्था का बडा महत्व होता है| अगर उस शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों को व्यवसाय दिलाना और उनको जीविकोपार्जन योग्य बनाना हो तो उस देश का विकास निश्चित होगा। शिक्षा अपने वास्तविक लक्ष्यों की प्राप्ति तभी कर पायेगी जब वह व्यावसायिक हो। वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में घटती इस प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए यह जरूरी है कि शिक्षा को पूर्णतः व्यावसायिक बनाया जाए। व्यावसायिक शिक्षा छात्रों को अपना व्यवसाय चुनने में ही सहायक नहीं होगी, अपितु इसके द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास भी संभव होगा।

अब हम यह देखने का प्रयास करेंगे कि ललित कलाएं, उपयोगी कलाएं, हस्त कलाएँ, लोक कलाएं आदि के अन्तर्गत तेलुगु क्षेत्र के कौन से अंश विलुप्त हो चुके हैं अथवा हो रहे हैं और उन्हें विकसित करने तथा रोजगारोपयोगी बनाने के माध्यम क्या हो सकते हैं| आन्ध्र प्रदेश में व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा देने वाले सरकारी विद्यालयों की संख्या बहुत कम है| इन में भी इन विषयों से संबंधित जो शिक्षक सेवानिवृत्त हो रहें हैं उनके स्थान पर नये शिक्षकों की नियुक्ति नहीं हो रही है| इस तथ्य से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस प्रान्त की सरकार अपने शिक्षा संगठनों में आये दिन व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा समाप्त करने की दिशा में अग्रसर है| इस मामले पर उससे प्रश्न करने वाले नागरिक अथवा समाज सेवी संगठन भी नहीं दिखाई देते| निजी क्षेत्र के शिक्षा संगठन तो शिक्षा को व्यापार का माध्यम मानते हैं और इसलिये उन में व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा का अस्तित्व बिलकुल ही नहीं है|

आन्ध्र प्रान्त में जहाँ भी व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा दी जा रही है वह तेलुगु माध्यम से ही दी जा रही है| परन्तु वहाँ भी विविध विषयों के अंतर्गत प्रयुक्त होने वाले अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दों को ही तेलुगु लिपि में पढ़ा/लिखा जा रहा झै| इनके लिये तेलुगु में पर्यायवाची शब्द बनाये नहीं गये और यदि थोडे बहुत बनाये भी गये हों तो उनकी जानकारी इस क्षेत्र के शिक्षकों को भी प्राप्त नहीं है| अत: सबसे पहले व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा के विविध विषयों से संबंधित पारिभाषिक शब्दों के तेलुगु पर्यायवाची शब्द बनाये जाने चाहिए और तदनन्तर उनका प्रचलन करके वे विषय पढ़ाने वाले शिक्षकों को उनका प्रयोग करने के लिये प्रेरित एवं बाध्य करना होगा| छात्र-छात्राओं के अभिभावकों को भी इस दिशा में जागरूक करना होगा| वास्तव में इस संबंध में अब तक कोई उपयुक्त सर्वेक्षण संपन्न नहीं हुआ-सा प्रतीत होता है|

औद्योगिक प्रशिक्षण संगठन (Industrial Training Institute ITI) द्वारा वेल्डर, मोटर मेकॉनिक, प्लंबर, कॉर्पेंटर, टर्नर, फिट्टर, टूल एंड डाइ मेकिंग, रेडियो एंड टेलीविजन, शीट मेटल, इलेक्ट्रोनिक्स आदि क्षेत्रों से संबंधित व्यावसायिक

शिक्षा दी जाती है| 10वीं कक्षा उत्तीर्ण उम्मीदवार इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं| वैसे तो उन में से 95% लोगों ने अपनी प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से प्राप्त की होगी| अत: उन्हें इस संगठन में व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करना कठिन नहीं होगा| इस संगठन में सारी पाठ्य पुस्तकें अंग्रेजी में ही होती हैं| शिक्षक उन्हें तेलुगु माध्यम में पढाते हैं| छात्र छात्राएँ उन्हें सुनते हुए अपना नोट्स अंग्रेजी में लिखते रहते हैं, क्योंकि उन्हें परीक्षाएँ अंग्रेजी माध्यम में ही लिखना होगा| संबद्ध शिक्षकों से पूछने पर यह बताया गया कि ये पाठ्यक्रम और परीक्षाएँ 'National Council for Vocational Training' (NCVT) द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होती हैं| अत: इनका तेलुगु माध्यम से संपन्न होना संभव नहीं है| स्पष्ट है कि इस से संबंधित व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा सामग्री अंग्रेजी को छोडकर किसी भी भारतीय भाषा में विकसित करने की चेष्टा नहीं की गई है|

इस सन्दर्भ में वर्ष 2023-24 की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर विचार करेंगे तो कुछ विशेष आयाम प्रकाश में आयेंगे| इसके अनुसार छात्रों को छठी कक्षा से कोडिंग सिखाई जायेगी| आगे से सभी विद्यालय डिजिटल्ली एन्क्रिप्ट किये जायेंगे| सभी प्रकार की शैक्षिक सामग्री को क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद किया जा सकेगा| इसके पहले विद्यालयों में 10+2 प्रणाली का अनुसरण किया जाता आ रहा है| नई शिक्षा नीति के अनुसार 5+3+3+4 प्रणाली का अनुसरण किया जायेगा| इसमें छठी कक्षा से लेकर व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं इन्टर्नशिप प्रारंभ होगा| अब देखना होगा कि इस दिशा में तेलुगु भाषा को क्या स्थान दिया जायेगा| इस नई शिक्षा नीति के अनुसार आन्ध्र प्रान्त में यदि छठी कक्षा से लेकर छात्र-छात्राओं को व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा दी जाएगी तो सभी दायित्वपूर्ण नागरिकों को उसे तेलुगु माध्यम से ही पढ़ाने की मांग करनी होगी| आवश्यक पाठ्य सामग्री तेलुगु माध्यम में तैयार करने की व्यवस्था आन्ध्र सरकार के शिक्षा मंत्रालय/विभाग को करना होगा|

अब हम यह देखेंगे कि व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा के क्षेत्र में तेलुगु भाषा की जिस निराशाजनक स्थिति का ऊपर उल्लेख किया गया है, उससे मुक्ति पाने के क्या उपाय हो सकते हैं| स्थिति को सुधार कर तेलुगु भाषा में छात्र-छात्राओं को हस्त कलाएँ, ललित कलाएँ, उपयोगी कलाएँ और आजीविका अर्जन हेतु उपयोगी व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने का प्रयास कैसे किया जा सकता है| वास्तव में यह एक सर्वविदित सत्य है कि व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा दोनों ही छात्र-छात्राओं को आजीविका प्राप्त करने योग्य बनायेगी| यदि यह शिक्षा आन्ध्र प्रान्त में उनकी ही अपनी मातृभाषा अर्थात् तेलुगु में दी जाती तो वह कितनी ही सहज, स्वाभाविक एवं उपयोगी होगी| यही नहीं, छात्र-छात्राएँ उसे बडी सरलता से एवं बेहतर ढंग से सीख पायेंगे| उनका कौशल इस क्षेत्र में बहुत ही उत्कृष्ट हेगा और जो भी कार्य वे करेंगे वह अत्यन्त सरलता से स्वीकृत होकर उन्हें उपयुक्त आजीविका प्रदान करेगा|

यह प्रक्रिया तभी सफलतापूर्वक संपन्न हो पायेगी जब इस प्रकार की राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि प्रान्तीय स्तर पर भी संगोष्ठियाँ आयोजित की जायेंगी, बुद्धजीवियों, शोध निर्देशकों, शोधार्थियों, शिक्षकों, छात्र-छात्राओं और अन्य सभी संबद्ध व्यक्तियों को इनमें शामिल किया जाए, उन्हें विचार विमर्श का अवसर दिया जाय और जो भी निष्कर्ष इन संगोष्ठियों में निकाले जाते हैं उन्हें प्रकाशित करके उन्हें सरकार की दृष्टि में लाया जाए| वास्तव में तेलुगु भाषा और तेलुगु लिपि दोनों ही अत्यन्त सशक्त और संप्रेषण प्रधान घटक हैं| उनका सही उपयोग जब व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा के क्षेत्रों में हो पाएगा तब यहाँ के छात्र-छात्राएँ आजीविका के अर्जन में पूर्णतया सक्षम हो जायेंगे|

एक अन्यतम उपाय यह भी हो सकता है कि आन्ध्र प्रान्त में जितने भी विश्वविद्यालय हैं उनमें कार्यरत तेलुगु विभाग के शोधार्थियों को इस क्षेत्र में शोध करने के लिये प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया जाय ताकि वे व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा से संबंधित सामग्री विशेष रूप से पारिभाषिक शब्दावली को तेलुगु में विकसित करना ही नहीं, परन्तु उनका प्रचलन करके तेलुगु भाषा की उर्वरता को बढाने की दिशा में सक्रिय चेष्टा हो पाएगी| इसके लिये सबसे पहले शोध निर्देशकों को विचार विमर्श करना होगा और उन्हें अपने शोधार्थियों को ऐसे विषय देने होंगे जिनके ऊपर शोध करने से व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा की सामग्री सशक्त रूप से तेलुगु भाषा के माध्यम में उपलब्ध हो और उसका प्रचार हो सके| जब भी ऐसे शोध प्रबंध पी एच डी उपाधि के लिये स्वीकृत होते हैं, शीघ्र ही उनका प्रकाशन करके संबंधित शिक्षकों को उनका

वितरण किया जाना चाहिए और उन्हें वे शोध प्रबंध पढ़कर उनका उपयोग संबंधित क्षेत्रों में करने का अनुरोध करे| सरकार को व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा देनेवाले शिक्षकों की नियुक्ति करने के लिये आवेदन देने होंगे| हम सब दायित्वपूर्ण नागरिक सरकार के सम्मुख प्रस्ताव देकर उसे यह कार्य करने हेतु बाध्य करना होगा| इस दिशा में हम सब को मिलकर एक ऐसा आन्दोलन चलाना होगा जिससे प्रभावित होकर सरकार इस आशय के लिये आवश्यक शिक्षकों की नियुक्ति करके तेलुगु माध्यम से छात्र-छात्राओं को व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा दे सके ताकि छात्र-छात्राओं को संबंधित सामग्री का सही अवगाहन हो पायेगा| इस क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों को भी कार्यशालाएँ आयोजित की जाय जिनमें उनको यह शिक्षा छात्र-छात्राओं को तेलुगु माध्यम से पढ़ाने की क्षमता प्राप्त हो सके|